International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 03, March 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

''दूरदर्शन कार्यक्रमों का स्नातक विद्यार्थियों की तकनीकी आकांक्षा पर प्रभाव''

अबधेश सिंह

शिक्षा विद्यार्थियों के आनन्दमयी जीवन एवं विकासशील प्रक्रिया है । जो इस बात पर निर्भर करती है कि बच्चा पढाई के शुरुआती दौर में कैसे–कैसे अनुभवों से गुजरता है । यदि ये अनुभव सुखद, रोचक है तो वह अधिक सीखने लगता है जिसका उसके जीवन मूल्यों पर गहरा सम्बन्ध होता है । और यदि अनुभव दुःखद है तो मूल्यों पर विपरीत प्रभाव पढता है। परन्तु शिक्षा आजीवन चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है जो कि जन्म से लेकर किसी न किसी रुप में मृत्युपर्यन्त चलती रहती है, विलियम ब्वायड के शब्दों में '' ऐतिहासिक काल से बहुत पहले मानव जब धीरे–धीरे जंगली जीवन छोड कर सामाजिक जीवन की ओर बढ़ रहा था, सीखने का कार्य निश्चित ही अधिक अंश में अनुभव और अनुकरण पर आश्रित था। किन्तु प्रस्तर युग में किसी न किसी प्रकार की व्यवस्था शिक्षा थी। इसका आभास उस काल से सम्बन्धित पशुओं के उन सुन्दर चित्रों से मिलता है। जो सींगों पर हाथी दाँत या गुफा की दीवारों पर खुदे हुये पाये गये हैं। '' शिक्षा प्रक्रिया द्वारा ही मनुष्य अपने आचार विचार तथा रहन सहन में परिवर्तन व परिमार्जन करता है तथा समाज में अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त करता है। सभ्य एवं सुसंस्कृति समाज की परिकल्पना शिक्षा से ही संम्भव है।

आदि काल से लेकर शिक्षा प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन हुये है। प्राचीन काल में विद्यार्थी गुरुओं के घर अथवा गुरुकुल में जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे, लेकिन आधुनिक समय में शिक्षा/ज्ञान संचार उपकरणों के माध्यम से विद्याथियों के घर पहुँच रहा है। आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिये हैं। पिछले कुछ दशकों से मास मीडिया–अखवार, रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर के क्षेत्र में आश्चर्य जनक रुप से बृद्धि हुयी है। इन संचार माध्यमों में दूरदर्शन वर्तमान शताब्दी का सर्व सुलभ, सस्ता एवं शसक्त माध्यम सावित हुआ है। मास मीडिया के रुप में इसकी व्यापक पहुँच को किसी भी स्थिति में कम करके नहीं ऑका जा सकता है।

इसी प्रकार सांस्कृतिक विरासत एवं मूल्यों को सम्भालने सहेजने एवं नयी पीढी को इतिहास व परम्पराओं से अवगत कराने में भी दूरदर्शन का महत्व पूर्ण योगदान है। विभिन्न धारावाहिक जैसे कि रामायण, महाभारत, डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, शास्त्रीय गीत संगीत विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व के कार्यक्रम हमारे सास्कृतिक एंव सामाजिक पृष्ठभूमि को सुदृण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मनोरंजन के क्षेत्र में तो दूरदर्शन वरदान सावित हुआ है। यह हमारे सामाजिक दायरे को रोचक तरीके से बढाने में मदद करता है। हम विभिन्न फिल्म धारावाहिक सजीव मैचों का प्रसारण आदि घर बैठे देख सकते हैं।

अनुदेषन प्राप्त करने के अतिरिक्त दूरदर्शन कार्यक्रम विभिन्न मूल्यों को प्रभावित करते है जैसे– ज्ञानात्मक, सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक, सौन्दर्यात्मक धार्मिक, मानवीय, सृजनात्मक मूल्यों वैज्ञानिक तकनीकी जैसी आकांक्षाओं आदि के उन्नयन में दूरदर्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।
इस आधार पर स्पष्ट है कि '' दूरदर्शन कार्यक्रमों का स्नातक विद्यार्थियों की तकनीकी आकांक्षा पर प्रभाव पडता है।''
नारायण(1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि ''टेलीविजन देखने का व्यावसायिक मूल्यों तथा तकनीकी आकांक्षा के बीच स्पष्ट सम्बन्ध होता है'' ।

बेहरा(1991) ने अपने अध्ययन में पाया कि टेलीविजन के शैक्षिक कार्यक्रम प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में प्रमुख रूप से ज्ञानात्मक, बोधात्मक एवं प्रयोगात्मक कौशलों का विकाश करने में सहायक है साथ ही साथ इनके द्वारा शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता तथा मूल्यों में भी बृद्वि होती हैं, शिक्षकों के इन गुणों पर टेलीविजन कार्यक्रमों का सकारात्मक प्रभाव पढता है ।

प्रस्तुत शोध कार्य में यह जानने का प्रयास किया गया है कि दूरदर्शन कार्यक्रमों का विद्यार्थियें की तकनीकी आकांक्षा पर किस प्रकार प्रभाव पढता है ।

उददेश्य– शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उददेश्य निर्धारित किये गये–

1–महाविद्यालयों के स्नातक विद्यार्थियों की तकनीकी आकांक्षा पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करना ।

2–महाविद्यालयों के शहरी तथा ग्रामीण स्नातक विद्यार्थियों की तकनीकी आकांक्षा पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करना ।

शोध की परिकल्पनाः– शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाऐं निर्धारित की गयी ।

1–महाविद्यालयों के स्नातक छात्र–छात्राओं की तकनीकी आकांक्षा पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नही है ।

2–महाविद्यालयों के शहरी तथा ग्रामीण स्नातक विद्यार्थियों की तकनीकी आकांक्षा पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नही है ।

न्यादर्ष– प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु महाविद्यालयों के 100 स्नातक विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है

उपकरण– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने डॉ प्रदीप कुमार तथा डॉ अजीत शंखधर द्वारा निर्मित और नेशनल साइकोलॉजीकल कारर्पोरेशन आगरा द्वारा मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया है।

परिसीमांकन– प्रस्तुत शोधकार्य जनपद फिरोजावाद के टूण्डला तहसील के महाविद्यालय के स्नातक विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है ।

शब्दपरिभाषीकरण–

1–**आकांक्षा** :–

लक्ष्य या मूल्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा आकांक्षा कहलाती है तथा इन लक्ष्यों या मूल्यों के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीवृता या स्तर की आकांक्षा स्तर है। आकांक्षा स्तर से व्यक्ति के तात्कालिक लक्ष्य का संकेत मिलता है। जिसे एक व्यक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है।

2– महाविद्यालय– जहॉ विद्यार्थियों को औपचारिक शिक्षा प्रदान की जाय तथा इनका स्तर स्नातक स्तर का हो ।

प्रयुक्त सांख्यिकी– प्रस्तुत शोध में केन्द्रिय प्रबृत्ति की माप तथा प्रमाप विचलन का प्रयोग किया जायेगा ।

सांख्यिकी विष्लेषण– शोधकर्ता ने ऑकडे एकत्रित कर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया ।

सारणी –1

शहरी			ग्रामीण		
छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग
25	25	50	25	25	50

सारणी –2

परिकल्पना–1:–

क्रम सं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की सं.	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
1.	शहरी–ग्रामीण छात्र	50	21.38	6.20	1.67
2.	शहरी–ग्रामीण छात्रायें	50	19.51	4.93	

डी.एफ. 98* पर परिगणित टी का मान 1.67 सारणी के 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.63 दौनों ही से कम है। अतः यह सार्थक नही है । शून्य परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है।

सारणी–3

परिकल्पना–2:–

क्रम सं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की सख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1.	शहरी विद्यार्थी	50	23.5	9.89	1.57
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	50	20.62	8.43	

डी.एफ. 98* पर परिगणित टी का मान 1.92 सारणी के 0.05 स्तर पर 1.98 तथा 0.01 स्तर पर 2.63 दौनों ही से कम है। अतः यह सार्थक नही है । शून्य परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है।

उपरोक्त परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष निकालते है। कि यदि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को अभिभावकों के उचित निर्देशन में टी. वी. कार्यक्रमों कों दिखाया जाता हैं तो विद्यार्थियों की तकनीकी आकांक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पढता है। तथा तकनीकी के इस युग में विद्यार्थियों की आकांक्षाओं में रूझान या परिवर्तन तकनीकी रूप में देखने को मिलता है।

सुझाव–प्रस्तुत शोध का भविष्य इस प्रकार से विस्तार कर सकते है।

1.प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर।

2.उच्च स्तरीय विद्यार्थियों पर ।

3.विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों पर।

4.विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों पर ।

संदर्भ सूची–

1.भटनागर, डॉ आर.पी.–शिक्षा अनुसंधन, लायल बुक डिपो, मेरठ.

2.गुप्ता,डॉ एस.पी.–आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद.

3.सिंह,अरूण कुमार–मनोविज्ञान,समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.